अध्याय-1

# विविधता की समझ

जब हम लोग अपनी कक्षा, आस–पड़ोस पर नजर दौड़ाते हैं, तो हमारे समान कोई नहीं दिखता। आखिर हम लोग एक समान क्यों नहीं दिखते? हमारे बीच विभिन्नता पाई जाती है। रंग–रूप, रहन–सहन, खान–पान, वेश–भूषा, जीवन–यापन, भाषा एवं त्योहारों के अतिरिक्त और भी बहुत सारी विभिन्नताएँ हैं। कक्षा में बैठे हुए विद्यार्थियों के रंग–रूप, वेश–भूषा, शारीरिक आकार आदि में जो भिन्नताएँ दिखती हैं वह आपकी कक्षा को विविधता प्रदान करते हैं।

## मित्रता

निशान अपने पिता के साथ पटना के बेली रोड स्थित आशियाना मोड़ के रामनगरी मुहल्ले में रहता था। इसी नुक्कड़ पर उसके पिता की एक किराना की दुकान थी। निशान पास के ही एक मध्य विद्यालय का छात्र था। कभी–कभी वह अपने पिता की दुकान पर उनके कामों में हाथ बंटाता था। उस दुकान पर पास के ही एक छात्रावास के कुछ लड़के अक्सर सामान खरीदने आया करते थे। लड़के दुकान के पास खड़े होकर कई बार आपस में अंग्रेजी में बातचीत किया करते थे। निशान उनको अंग्रेजी में बात करता देख आश्चर्यचकित होता और उसकी भी इच्छा होती कि वह भी अंग्रेजी में बात करे। एक दिन वे लड़के सामान खरीदने उसकी दुकान पर आये, उन्होंने सामान खरीदने के क्रम में उसका नाम पूछा तो, उसने अपना नाम 'निशान' बताया। अरे देखो! अपने साथी की ओर इशारा करते हुए लड़कों ने कहा, 'इसका भी नाम निशान है।' दोनों निशान एक दूसरे से परिचय प्राप्त किये । एक निशान पांचवीं कक्षा का छात्र था तो दूसरा निशान जिसका पूरा नाम निशान अहमद था, इंजीनियरिंग अंतिम वर्ष का छात्र था, जो बिहार के किशनगंज जिले का निवासी था। एक दिन छोटे निशान ने बड़े निशान से अंग्रेजी सीखने की इच्छा जाहिर की तो बड़े निशान ने

उसे खाली समय में अंग्रेजी सिखाने का वादा किया। इसी प्रकार दोनों निशान आपस में काफी घुल–मिल गये एवं खाली समय में बड़े निशान अपने छोटे दोस्त को अंग्रेजी सिखाने लगा। जहाँ निशान अहमद को हिन्दी के साथ अंग्रेजी अच्छी आती थी, वहीं निशान मगही एवं हिन्दी बोलता था। कुछ दिनों के बाद निशान की फाइनल परीक्षा खत्म हुई और वह नौकरी की तलाश में दिल्ली चला गया। बड़े निशान के दिल्ली चले जाने के बाद छोटे निशान को पता चला कि बड़े निशान का पूरा नाम निशान अहमद है।

**प्रश्न– निशान और निशान अहमद में दो या तीन अन्तर कौन–कौन से हैं?**

दोनों की उम्र और पढ़ाई–लिखाई में भी अंतर है। एक निशान पांचवीं कक्षा का छात्र है वहीं निशान अहमद इंजीनियरिंग का छात्र है। दोनों की धार्मिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि भी अलग है। जहाँ निशान अहमद किशनगंज का एक मुसलमान है, वहीं निशान पटना का एक हिन्दू है। इन सभी अंतरों के बावजूद दोनों में दोस्ती हुई। इस प्रकार हम देखते हैं कि, खान–पान, पहनावा, धर्म, भाषा, रंग–रूप, आकार आदि विभिन्नताएँ होते हुए भी दोनों मित्रता के एकसूत्र में बंधे हुए थे।

**प्रश्न– उन त्योहारों की सूची बनाइए जो निशान अहमद एवं निशान मनाते होंगे।**

## विविधता हमारे जीवन को समृद्ध करती है–

जैसे निशान अहमद और निशान दोनों दोस्त बने ठीक वैसे ही आपके भी साथी होंगे जो आपसे कुछ अलग होंगे। आपने शायद उनके घर में अलग तरह का खाना खाया होगा, उनके साथ त्योहार मनाये होंगे, उनका रहन–सहन एवं थोड़ी बहुत उनकी भाषा भी सीखी होगी।

इसी प्रकार विभिन्न प्रदेशों के खान–पान में भी अंतर देखने को मिलता है। बिहार के लोग लिट्टी–चोखा पसन्द करते हैं वहीं पंजाब के लोग मक्के की रोटी और सरसों की साग बहुत पसन्द करते हैं। पश्चिम बंगाल के लोग मछली और चावल बड़े चाव से खाते हैं। दक्षिण भारत के राज्य तमिलनाडु, केरल और आंध्रप्रदेश के लोग इडली, डोसा और सांभर खाना पसन्द करते हैं।

इन राज्यों का प्रमुख व्यंजन निम्न प्रकार के हैं–

बिहार का लिट्टी–चोखा

बंगाल का मछली–चावल

दक्षिण भारत का प्रसिद्ध इडली–डोसा

दक्षिण भारतीय थाली

गुजराती थाली

**शिक्षक की सहायता से बिहार के अलग–अलग जिलों के प्रसिद्ध व्यंजनों की एक सूची तैयार करें।**

इतना ही नहीं विभिन्न राज्यों के रीति–रिवाज और त्योहारों में भी भिन्नता होती है। जहाँ बिहार का एक मशहूर पर्व छठ है, पश्चिम बंगाल का दुर्गा पूजा, महाराष्ट्र का गणेश उत्सव एवं केरल का ओणम है। वहीं झारखण्ड में सरहुल पर्व मनाया जाता है।

बिहार का छठ पर्व

झारखण्ड के सरहुल मनाते लोग

केरल में ओणम के अवसर पर नौका दौड़

पंजाब में लोहड़ी पर्व मनाते लोग

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारत के विभिन्न राज्यों के निवासियों के अलग–अलग खान–पान, वेश–भूषा, रीति–रिवाज एवं पर्व–त्योहार विविधता को दर्शाते हैं।

बिहार भी विविधताओं से भरा पड़ा है। हम अलग–अलग भाषाएँ बोलते हैं। अनेक प्रकार का खाना खाते हैं। अलग–अलग त्योहार मनाते हैं और भिन्न–भिन्न धर्मों का पालन करते हैं। जैसे– मिथिलांचल के लोग जब भोजपुर के निवासियों के संपर्क में आते हैं तो दोनों एक दूसरे की बोल–चाल, खान–पान, रहन–सहन, रीति–रिवाज, त्योहारों इत्यादि से परिचित

होते हैं और एक–दूसरे का सम्मान करते हैं। उन्हें एक हद तक अपनाने की भी कोशिश करते हैं। इस तरह विविधता हमारे जीवन को समृद्ध करती है।

इसी तरह बिहार के लोग जब भारत के अन्य राज्यों जैसे दिल्ली, मुम्बई, पश्चिम बंगाल, पंजाब, हरियाणा, गुजरात में काम अथवा व्यवसाय करने जाते हैं तो वहां के स्थानीय लोगों की भाषा, रहन–सहन, रीति–रिवाज, खान–पान, त्योहार का प्रभाव उनके जीवन पर पड़ता है।

**प्रश्न– विविधता हमारे जीवन को कैसे समृद्ध करती है ? शिक्षक के साथ चर्चा कर लिखें।**

### विविधता के प्रति सम्मान :

यह कहानी एक आवासीय विद्यालय में पढ़ने वाले चार मित्रों की है जो कक्षा नौ के छात्र है। इनके नाम नवीन, रफी, शालिनी एवं रॉबिन है। इनकी मातृभाषा भी अलग–अलग है। जहां नवीन हिन्दी बोलता है, वहीं रफी उर्दू शब्दों का प्रयोग ज्यादा करता है। शालिनी जहां पंजाबी बोलती है, वहीं रॉबिन की भाषा में अंग्रेजी का प्रयोग ज्यादा हुआ करता है। सबकी भाषा अलग होने के बावजूद सभी अच्छी हिन्दी बोल लेते हैं और आपस में अच्छे मित्र भी हैं।

मार्च के महीने में विद्यालय में होली की छुट्टी हुई तो नवीन ने अपने सभी मित्रों को अपने घर आने का निमंत्रण दिया। होली के दिन सभी नवीन के घर पहुंचे। नवीन और उसके माता–पिता ने बच्चों का जोरदार स्वागत किया। सभी बच्चों ने मिल–जुल कर रंग खेला एवं एक –दूसरे को अबीर–गुलाल लगाया। अंत में नवीन की मां ने सारे बच्चों को खाने पर बैठने के लिए कहा। सामने तरह–तरह के स्वादिष्ट भोजन देखकर सभी बच्चे उस पर टूट पड़े। इसी प्रकार अगली बार सभी बच्चे क्रिसमस के मौके पर रॉबिन के यहां पहुंचे।

रॉबिन के घर की सजावट देखकर सभी बच्चे बहुत खुश हुए। रात में सभी ने "क्रिसमस ट्री" को छोटे–छोटे बल्बों से सजाया एवं सबने मिलकर केक एवं पेस्ट्री का मजा लिया। खाने

के बाद बच्चों ने नाच–गान का आनंद लिया। अगली सुबह नास्ते पर रॉबिन के पिताजी ने बताया कि हमारे देश में सभी धर्मों के लोग रहते हैं, अलग–अलग मातृभाषा बोलते हैं। पर सभी एक–दूसरे का सम्मान भी करते हैं। हमारा त्योहार क्रिसमस भी यही संदेश देता है। अमीर हो या गरीब, छोटा हो या बड़ा, चाहे किसी भी धर्म को मानने वाला हो सभी लोग एक–दूसरे से मिल–जुल कर इस त्योहार का आनंद लेते हैं।

राजगीर भ्रमण

**प्रश्न–**

**1. अपने माता–पिता या शिक्षक की सहायता से एक कहानी लिखें जो विविधता में एकता को दर्शाती है।**

**2. आप गर्मी के छुट्टी में कहाँ जाना पसंद करते हैं और क्यों?**

लगभग दो साल पहले की बात है मध्य विद्यालय सारंगपुर, जिला–भोजपुर के बच्चे एक बार भ्रमण के लिए राजगीर गए। जब विद्यालय के बच्चे वेणुवन पहुंचे तभी वहां एक दूसरा परिभ्रमण दल आया जो मध्य विद्यालय नौहट्टा जिला सहरसा के थे। भोजपुर के बच्चे भोजपुरी में बात करते हुए घूम रहे थे। तभी एक बच्चे का ध्यान सहरसा से आए हुए बच्चों की ओर गया जो आपस में बात कर रहे थे, परन्तु उनकी बात उसे समझ में नहीं आई। वह अपने एक साथी के साथ दूसरे दल के एक बच्चे के पास गया और पूछा– आप कौन–सी भाषा बोल रहे हैं? दूसरे दल के बच्चे ने जवाब दिया– मैं सहरसा जिले का हूं और मेरी मातृभाषा मैथिली है। दोनों दल के बच्चे एक साथ हिन्दी में बात करते हुए घूमने लगे। दोनों बच्चों के बीच आपस में काफी मित्रता हो गई। जब बच्चे जलपान के लिए अपने–अपने शिक्षकों के साथ बैठे, तो उन्होंने बताया कि दूसरा दल जो हम लोगों के साथ घूम रहा था, उनकी मातृभाषा मैथिली है।

फिर शिक्षक महोदय ने बताया हमारे राज्य बिहार में न सिर्फ हिन्दी बल्कि भोजपुरी,

मगही, मैथिली, अंगिका एवं वज्जिका इत्यादि भाषाएँ भी बोली जाती हैं। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि पूरे भारत में 1652 से भी अधिक भाषाएँ बोली जाती हैं। हम लोग बहुभाषी हैं। आमतौर पर हम सभी एक से अधिक भाषाओं का इस्तेमाल करते हैं। इसलिए आसानी से सम्पर्क हो जाता है एवं अलग–अलग राज्यों में अलग–अलग भाषाओं में कामकाज भी किया जाता है। संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को सम्मिलित किया गया है।

### शिक्षक की मदद से तालिका को भरें :

| क्र.सं. | राज्य का नाम | बोली जाने वाली भाषाएं |
|---|---|---|
| 1 | बिहार | |
| 2 | उत्तर प्रदेश | |
| 3 | पंजाब | |
| 4 | कर्नाटक | |
| 5 | तमिलनाडु | |
| 6 | केरल | |
| 7 | पश्चिम बंगाल | |
| 8 | उडीसा | |
| 9 | मणिपुर | |
| 10 | आसाम | |
| 11 | गुजरात | |
| 12 | महाराष्ट्र | |

### भेदभाव एवं असमानता

ऊपर हम विविधता के बारे में पढ़ चुके हैं। हमने यह भी देखा कि विविधता हमारे जीवन को समृद्ध बनाती है, परन्तु समाज में कुछ ऐसी घटनाएं भी होती हैं जिससे हमें दुःख होता है। कुछ लोग अपने विचारों को ही श्रेष्ठ समझते हैं एवं दूसरों को हीन दृष्टि से देखते हैं। समाज में व्याप्त अशिक्षा, अविश्वास, अंधविश्वास, गरीबी, स्वार्थ इत्यादि के कारण भेद–भाव एवं

असमानता देखने को मिलती है। ये भेद–भाव, अमीर–गरीब, पढ़े–लिखे और अनपढ़, सवर्णों एवं दलितों, महिलाओं और पुरुषों का हो सकता है।

## रामजीवन की कहानी

रामजीवन सुपौल जिला के सुखपुर गाँव का एक प्रतिष्ठित व्यक्ति है। विवाह के 10 वर्षों के पश्चात् उसके घर में एक लड़की का जन्म हुआ। रामजीवन की चाह तो बेटे की थी पर बेटी पाकर भी वे संतुष्ट थे। बेटे की चाह में एक वर्ष बाद पुनः बेटी ही होती है। दो बेटियाँ होने के कारण वह काफी चिन्तित रहने लगा। बेटे की चाहत में वह मंदिरों – मस्जिदों में हाथ जोड़ने और मन्नतें मांगने लगा। इसी तरह पाँच वर्ष बीत जाने के बाद आखिरकार तीसरे बच्चे के रूप में उसे पुत्र की प्राप्ति हुई। खुशी के मारे उसने पूरे गाँव में भोज की व्यवस्था की। गुजरते समय के साथ माता–पिता दोनों बेटियों की अपेक्षा बेटे के रहन–सहन,खान–पान, पहनावा, खेलकूद आदि पर विशेष ध्यान देते थे। जबकि बेटियों से घर का सारा काम (जैसे–भोजन पकाना, चौका–बर्तन, झाडू–पोछा आदि काम ) करवाया जाता था। बेटियाँ इन कामों के अलावे पढ़ाई पर खुद से ध्यान देतीं थीं। वहीं बेटे के लिए स्कूली शिक्षा अच्छे विद्यालय में होती थी और साथ में ही उसे घर पर शिक्षक आकर पढ़ाया करते थे। परन्तु, वह पढ़ाई के बदले खेल–कूद, लड़ाई–झगड़ा किया करता था। इस तरह हमने देखा कि रामजीवन बेटियों की अपेक्षा बेटा को ज्यादा महत्व देता था। वह बेटा एवं बेटी में भेदभाव करता था, जो लैंगिक असमानता को दर्शाता है। ऐसे लोग अपनी अज्ञानता एवं संकुचित मानसिकता के कारण समाज में होने वाले परिवर्तन को नजर अंदाज करते हैं। इतिहास साक्षी है कि लड़कियों ने धरती से लेकर आकाश तक अपनी कामयाबी के परचम लहरायें हैं।

**प्रश्न– क्या आपको लगता है कि लड़कियों के साथ भेदभाव होना चाहिए ?**

ऊपर की कहानी लैंगिक भेदभाव को दर्शाती है परन्तु समाज में न सिर्फ लैंगिक भेदभाव ही है बल्कि निःशक्तों एवं सामान्य, सवर्णों एवं दलितों के साथ–साथ अमीर और गरीब के बीच अंतर की घटनाएँ भी हमें देखने को मिलती है। आपने भारतरत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर का नाम सुना होगा आइए उनके बारे में जानते हैं–

डॉ. भीमराव अंबेडकर (1891–1956) का जन्म महार जाति में हुआ था जो अछूत मानी जाती थी। महार लोग गरीब होते थे, उनके पास जमीन नहीं थी और उनके बच्चों को वही काम करना पड़ता था जो वे खुद करते थे। उन्हें गांव के बाहर रहना पड़ता था और गांव के अंदर जाने की इजाजत नहीं थी।

डॉ० अंबेडकर

डॉ. अंबेडकर अपनी जाति के पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने अपनी कॉलेज की पढ़ाई पूरी की और वकील बनने के लिए इंग्लैण्ड गए। उन्होंने दलित वर्ग के लोगों को अपने बच्चों को स्कूल–कॉलेज भेजने के लिए प्रोत्साहित किया और अलग–अलग तरह की सरकारी नौकरी करने को कहा ताकि वे जाति व्यवस्था से बाहर निकल पाएँ। दलितों के मंदिर में प्रवेश के लिए कई प्रयास किये जा रहे थे, उनका डॉ. अंबेडकर ने नेतृत्व किया। उनका मानना था कि दलितों को जाति प्रथा के खिलाफ अवश्य लड़ना चाहिए और ऐसा समाज बनाने के लिए प्रयास करना चाहिए जिसमें सबकी इज्जत हो। लम्बे समय तक दलित लोगों को शिक्षा, स्वास्थ्य एवं धार्मिक क्रिया–कलापों से वंचित रखा गया। यहाँ तक की उन्हें सार्वजनिक मंदिरों में घुसने तक नहीं दिया जाता था। महात्मा गाँधी, डॉ0 अंबेडकर, ज्योतिबा फूले आदि महापुरुषों ने जोर देकर कहा कि यह प्रथा अमानवीय है। न्याय तभी प्राप्त हो सकता है जब सब लोगों के साथ बराबरी का व्यवहार हो। स्वतंत्र भारत में एक लोकतांत्रिक समाज की कल्पना की गई है, जो संविधान की प्रस्तावना में स्पष्ट दिखता है :–

"हम, भारत के लोग, भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व–सम्पन्न, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को:

**सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,**

**विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म**

**और उपासना की स्वतंत्रता,**

**प्रतिष्ठा और अवसर की समता**

**प्राप्त करने के लिए**

**तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और**

**राष्ट्र की एकता और अखंडता**

**सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए**

दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

प्रश्न–

1. क्या आपने किसी के साथ भेदभाव होते हुए देखा है ? उदाहरण के साथ बताइए।
2. अगर किसी के साथ भेदभाव होता है तो क्या आपने इस स्थिति में उसकी मदद करने का प्रयास किया ?
3. आपकी समझ से इस समाज में किस प्रकार के भेदभाव होते हैं ?
4. समाज में भेदभाव क्यों होता है ?

## कविता

### लहू का रंग एक है

लहू का रंग एक है, अमीर क्या गरीब क्या
बने हैं एक खाक से, दूर क्या करीब क्या
वही है तन वही है जान, कब तलक छिपाओगे
पहन के रेशमी लिबास, तुम बदल ना जाओगे
सभी हैं एक जाति हम, सवर्ण क्या अवर्ण क्या
लहू का रंग एक है, अमीर क्या गरीब क्या
जी एक हैं तो फिर न क्यों, दिलों का दर्द बांट लें
जिगर का दर्द बांट लें, लबों का प्यार बांट लें
खता है सब समाज की, भले–बुरे नसीब क्या
लहू का रंग एक है, अमीर क्या गरीब क्या
कोई जने हैं मर्द, तो कोई जनी है औरतें
शरीर में भले हो फर्क, रूह सबकी एक है
एक है जो हम सभी, विषमता की लकीर क्या
लहू का रंग एक है अमीर क्या गरीब क्या।

## अभ्यास

1. किस आधार पर आप कह सकते हैं कि रामजीवन अपने बेटा एवं बेटियों के बीच भेदभाव करता था?
2. व्यक्तियों के बीच विभिन्नताओं के कौन–कौन से आधार हैं?
3. भारतीय संविधान के आठवीं अनुसूची में कितनी भाषाओं का उल्लेख किया गया है?
4. आपके विचार से बिहार की विविधता हमारे जीवन को कैसे समृद्ध बनाती है?
5. आपके अनुसार जिस व्यक्ति के साथ भेदभाव होता है, उसे कैसा महसूस होता है?
6. दो व्यक्तियों के चित्र एकत्र करें जिन्होंने भेद–भाव एवं असमानता के विरुद्ध कार्य किया है।
7. पाँच लड़कियों के नाम एकत्र करें जिन्होंने अपने देश का नाम रौशन किया है।